Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XI Issue – III May – June 2022

हिंदी साहित्य के गगन में चमकता सितारा धर्मवीर भारती

जान्हवी जितेंद्र मोहिते,
रुम न.104, पहिला मजला, शेवंता हाइट्स,
गोपीनाथ चौक, डोम्बिवली (पश्चिम) महाराष्ट्र

धर्मवीर भारती वे असाधारण लेखक थे, जिन्होंने अपने सर्वतोमुखी प्रतिभा से साहित्य की हर एक विधा को एक नया अप्रत्याशित मोड़ देकर मानो नया जीवन प्रदान किया हो | कहानी हो या उपन्यास, नाटक हो या ललित निबंध हर एक विधा में उन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभा की छाप छोड़ी है | उनकी सृजन प्रतिभा से अनायास ही प्रभावित होकर साहित्यकारों व पाठकों के मुहँ से **'जीनियस'** शब्द निकल जाता है | इनके काव्य सृजन की दिशा प्रगतिवाद व प्रयोगवाद के संघर्ष से निर्मित हुई | भारतीजी हमेशा से ही अपने साहित्यिक ज्ञान को स्वस्थ, समन्वित और समग्र रूप से प्रस्तुत करते थे | भारतीजी कृत **'गुनाहों का देवता'** उपन्यास का जादू पाठकों को पूरीतरह से सम्मोहित करता है, क्योंकि उसमे उस रौमानी दौर का वर्णन है जब आँखों में रंगीन सपने झिलमिलाते हैं | **'सूरज का सातवां घोडा'** भविष्य के सपने और वर्तमान के नविन आकलन लाता है | **'ग्यारह सपनों का देश'** मध्यमवर्गीय परिवार का चित्र उपस्थित करता है | तदन्तर अनेकानेक सामाजिक समस्या और उन पर गहन चिंतन लिए हुए आते है---**'बंद गली का आखिरी मकान'** और **'चांद और टूटे हुए लोग'** | सम्पूर्ण कथा साहित्य इनको कदम-दर-कदम प्रगति पथ पर आगे ही बढाता गया |

Golbal Oline Electronic International Reserch Journal's licensed Based on a work at *http://www.goeiirj.com*

धर्मवीर भारती जयशंकर प्रसाद के सामान ही मूलतः प्रेम व सौंदर्य के कवि है | परन्तु इनका चिंतनीय रूप भी है जो आधुनिक जीवन और वृहत्तर मानव मूल्यों से टकराए बिना नहीं रहता | इन्होने अपने जीवन में जिस किसी विधा का स्पर्श किया उसमें अपनी अलग पहचान बनाई है | हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में ये अत्यंत सफल रहे | लोकप्रियता की दृष्टि से **'गुनाहों का देवता'** का महत्व निर्विवाद है तो प्रयोग की दृष्टि से **'सूरज का सातवाँ घोडा'** का | दोनों का महत्व एक जैसा है | हिंदी के ललित निबंधों, एकांकी, रिपोर्ताज, तथा समीक्षा सभी क्षेत्रों में भारतीजी ने जो लेखन किया है वह परम्परा से हटकर है, सर्वथा नूतन है | व्यक्ति और समाज, परंपरा और आधुनिकता सभी दृष्टियों में इनका लेखन इनके चिंतन के अनुरूप है | कहानीकार के रूप में **'बंद गली का आखिरी मकान'** की सभी कहानियाँ इनके व्यक्तित्व व प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाती हैं | **'अंधा युग'** नाटक इनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना है | इसमें नाटक और काव्य का चरम विकास परिलक्षित होता है | इस कृति द्वारा हिंदी साहित्य को 'काव्य नाटक' के रूप में एक आदर्श व अनोखा उपहार मिला है | यह भी सच हैं कि कालांतर में अनेक रचनाकारों ने इस काव्य नाटक से प्रेरित होकर अपना सृजन कार्य सफलता पूर्वक किया

है| इनकी हर एक रचना में परंपरा व आधुनिकता का गहरा सम्बन्ध दिखाई देता है | इन्होनें अपनी बहुमुखी रचना प्रतिभा से अपने समकालीन अनेक लेखकों को प्रेरित कर उन्हें साहित्य क्षेत्र में स्थापित करने में तथा ख्याति बटोरने में बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया |

हालांकि इन्होने डायरी, शब्द चित्र, आत्मव्यंग्य व रिपोर्ताज जैसी अनेक विधाओं में अल्प लेखन ही किया है फिर भी इनका लेखन हर क्षेत्र में अपनी अनूठी छाप अंकित करता है | बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के दौरान इन्होनें मुक्त वाहिनी की गतिविधियों का जो आंखों देखा विवरण **"धर्म युग"** में धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत किया था वह सामान्य अखबारी रिपोर्ट का स्तर न होकर समकालीन सन्दर्भों से स्वयं की मूल्यवत्ता सिद्ध करता है| हिंदी के ललित निबंधों के लेखकों में अग्रगण्य माने जाने वाले भारतीजी के **'ठेले पर हिमालय'** **'पश्यन्ति'** तथा **'कहनी-अनकहनी'** निबंध इनके सम्पूर्ण सृजन को चार चाँद लगाते हैं | व्यष्टि और समष्टि के स्तर पर जितने भी संघर्ष और विरोध झेलने होते हैं – भारतीजी ने सब कुछ झेला और अंत तक ये आस्था व मानव मूल्यों के पक्षधर बने रहे | इस बात को सिद्ध करता है इनका समूचा साहित्य जो हिंदी साहित्य की अनमोल धरोहर है और इसीलिए हम इन्हें **'हिंदी साहित्य के गगन का चमकता सितारा'** ऐसी उपमा देते हैं | **'दूसरा सप्तक'** में भारतीजी ने अपने समकालीन कवियों में सर्वाधिक रोमांटिक कवि रहे हैं | निश्चय ही भारतीजी को साहित्य का बहुआयामी व बहुशिल्पी लेखक कह सकते हैं | विधा हो या शिल्पकारिता, प्रयोगशीलता हो या भाषा, परंपरा हो या आधुनिकता इन्होने हर जगह अडिगता से अपनी अनोखी छाप छोड़ी है | इनका चमकता व्यक्तित्व कार्तिक-अगहन की धूप की तरह नहीं था बल्कि फागुन की धूप की तरह खुला था | इस व्यक्तित्व के साथ कही भी कुहाँसा नहीं था बल्कि ओस सी पारदर्शिता थी | ये पात्रों को जीवन के यथार्थ से चुनते हैं और उसी यथार्थता से प्रस्तुत भी करते हैं | सभी पाठकों का ध्यान इनकी भाषा की इन्द्रधनुषी रंगों की तरह आकृष्ट होता है | अपने सृजन को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए इन्होनें उर्दू के चुने हुए शब्द, मुहावरे, तथा कहावतों का भी यथास्थान बहुत ही साधे हुए अंदाज़ में प्रयोग किया है | इन्होने अपने समग्र साहित्य में मूल्यों का यथा स्थान प्रयोग कर समाज व्यवस्था को बदलने और मानवता के सहज मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की ताकत व प्रेरणा दी है | इनका सम्पूर्ण साहित्य मूल्यपरक साहित्य है | इनकी शैली में आत्मीयता का परिचय होता है इसीलिए इन्होनें साहित्य सृजन में अपनी बात एक आकर्षक व सहज ग्राह्य शैली में प्रस्तुत की है | इनके सृजन में कथानक के वृत्तों में केन्द्रानुभूति, स्वाभाविक गति और चरमोत्कर्ष एक सा बना रहता है | कुलमिला कर हम कह सकते हैं कि इनके वर्णन की शैली अत्यंत रौचक व सुन्दर है | विभिन्न शैलियों के प्रयोग से ह्रदय कभी आल्हादित होता है तो कभी मायूस | इनके साहित्य को पढ़कर पाठक निश्चित रूप से सोचने के लिए विवश हो उठता है | इनके कथा साहित्य में मार्मिकता के साथ ही जीवन का एक स्वच्छ दृष्टिकोण भी निहित है | आज का युग मशीनी युग है जिसमें मानव ने अपनी सारी नैतिकता समाप्त कर दी है | जिस धरातल पर आज का मानव समाज खड़ा है वहाँ उसने अपनी पुरानी मान्यताओं को तो समाप्त कर ही दिया बल्कि नए और सफल आदर्शों को भी स्थापित कर न सका | भारतीजी ने अपने सामने यही उद्देश्य रखा की मानव-मानव में निश्छल प्रेम निर्मित हो सके |

गंभीर पत्रकारिता के मानक निर्धारक डॉ. धर्मवीर भारती का जन्म २५ दिसम्बर सन १९२६ में इलाहबाद में हुआ था | इनकी शिक्षा-दीक्षा व प्रथम काव्यसंस्कार प्रयाग में ही हुए थे | संयोग से जहाँ पर इन्होने अध्ययन किया वहीँ पर अध्यापन का भी कार्य इन्होने संभाला | १९४८ में इलाचंद्र जोशी के

सहयोग से सहकारी सम्पादक बने तदन्तर इनकी नियुक्ति हिन्दुस्तानी अकादमी में एक अध्यापक के पद पर हुई। १९६० तक इन्होने अध्यापन कार्य किया। इसी दौरान इन्होने हिंदी साहित्य कोश के सम्पादन कार्य में भी सहयोग किया। 'निकष' नामक पत्रिका आरम्भ की 'आलोचना' का भी सम्पादन किया। और सबसे ख़ास बात ये की अब ये 'धर्मयुग' के प्रधान सम्पादक बने और मुम्बई आगये। १९८७ में इन्होने अवकाश ग्रहण किया। १९९९ में युवा कहानीकार उदयप्रकाश के निर्देशन में इनके उपर एक वृत्तचित्र का निर्माण हुआ। धर्मयुग के लिए इन्हें एक गंभीर पत्रकारिता का मानक निर्धारित किया जो अद्वितीय है। इनकी उपन्यास 'गुनाहों का देवता' पढ़ कर सभी ने यही कहा कि " सत्तर के दशक में एक पूरी पीढ़ी जवान होगई।" इसी तरह इनका प्रथम काव्य संग्रह 'ठंडा लोहा' ने भी खूब ख्याति प्राप्त की।

इनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार है।

1. **कहानीसंग्रह**—मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान, सांस की कलम से
2. **काव्यसंग्रह**— ठंडा लोहा, अंधा युग, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी भी, आद्यंत
3. **उपन्यास**---गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोडा, ग्यारह सपनों का देश, प्रारंभ व समापन
4. **निबंध**—ठेले पर हिमालय, पश्यन्ति, कहनी-अनकहनी, शब्दिता

ठंडा लोहा में भारतीजी ने **'जीवन फलक'** की व्याख्या कुछ इस तरह से की---

"जीवन है कुछ इतना विराट, इतना व्यापक
उसमें है सबके लिए जगह, सबका महत्व।"

भारतीजी को अपने जीवन में अनेकानेक पुरस्कार व सम्मान भी प्राप्त हुए जो इस तरह से है---

1. **१९७२—पदम् श्री**
2. **१९८४—हल्दी घाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार (महाराणा मेवाड़ फाऊन्डेशन)**
3. **१९८८—सर्वश्रेष्ठ नाटककार पुरस्कार (संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली)**
4. **१९८९—भारत भारती पुरस्कार (उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान)**
5. **१९९०—महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार (महाराष्ट्र सरकार)**
6. **१९९४—व्यास सम्मान**

प्राप्त हुए पुरस्कार व सम्मान को देखने का उनका एक अलग ही नजरिया था। जो १९८८ में प्रकाशित कादम्बिनी में इनके द्वारा लिखे हुए लेख में हमने पढ़ा था---**"मैं सम्मान को एक अलग नजरिये से देखता हूँ। क्या सम्मान एक व्यक्ति का होता है...? नहीं। मेरा मानना है कि व्यक्ति चाहे मैं होऊँ या कोई और...व्यक्ति केवल प्रतिक है। असल में सम्मान तो उस सृजन धर्मिता का है जो अनेक दबावों और सृजन**

विरोधी परिस्थितियों के जाल में फंसी है, लेकिन फिर भी अपने पंख फैलाकर मनचाही उड़ान भरने के लिए आतुर है। उड़ पाए या न उड़ पाए पर अपने कजोर पंखों से आसमान नाप लेने की उसकी अपनी तड़प ज़िंदा है। सचमुच सृजन की उसी तड़प का होता है सम्मान।"

और अंत में....

सृजनधर्मिता से साहित्य का आसमान नाप लेने की तड़प रखने वाले इस महान साहित्यकार ने ४ सितम्बर १९९७ के दिन मुम्बई में अपनी आखिरी सांसें ली, परन्तु सृजन शीलता की जिस पाठशाला का इन्होनें आरम्भ किया था वह पाठशाला इस भौतिकीय संसार में इनकी अनुपस्थिती में भी जोरों से गतिमान है। और इनका नाम आज भी अजर-अमर है। ऐसे महान साहित्यकार जो न केवल हिंदी साहित्य के गगन पर बल्कि भारतीय साहित्य के गगन पर भी चमकते हुए सितारे की भांति आज भी चमकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. अशोक कुमार शुक्ला--- अंतर्जाल पर प्रस्तुत आलेख से
2. कादम्बिनी १९८८ में प्रकाशित—अंतरजाल से
3. कुछ अन्य महत्वपूर्ण बातें—अंतरजाल से